>

Title: Regarding naming of scheme in the name of Saint Meghmaya

डॉ. (प्रो.) किरिट प्रेमजीभाई सोलंकी (अहमदाबाद पश्चिम): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे एक महत्वपूर्ण विषय उठाने की अनुमति दी ।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को और पूरे देश को बताना चाहता हूं कि गुजरात में तकरीबन 900 साल पहले वीर मेघमाया नामक एक ऐसे सन्त पैदा हुए थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और पानी के लिए अपने प्राणों की कुर्बानी देकर एक बड़ा कार्य किया था । आज से 900 साल पहले गुजरात की राजधानी पाटण हुआ करती थी । उस समय वहां के राजा सिद्धराज जयसिंह थे । वहां कुछ सालों के लिए अकाल पड़ा । जब वहां पानी की किल्लत थी तो सिद्धराज जयसिंह ने वहां सहस्त्रलिंग तालाब का निर्माण करवाया । उसके चारों ओर एक हजार शिवलिंग थे । पर, वहां पानी नहीं आया । जब वहां पानी न आने का कारण पूछा गया तो पंडितों ने बताया कि इसके शापित होने की वजह से यहां पानी नहीं आया है और अगर कोई बत्तीसलक्षणा (सर्वगुणसम्पन्न) पुरुष उसमें अपने प्राणों की आहूति देता है तो उसमें पानी आएगा । वीर मेघमाया एक दलित बुनकर सन्त थे । उन्होंने अपने प्राणों की आहूति दी और राजा से उन्होंने गुहार की कि जो दलितों के प्रति लोग अस्पृश्यता रखते हैं, उसे मिटाया जाए । ऐसे सन्त ने पानी के कारण अपना बलिदान दिया तो लोगों को वहां पानी मिला ।

महोदय, जब प्रधान मंत्री जी ने जल शक्ति मंत्रालय बनाया है तो आपके माध्यम से मैं सरकार से गुहार करता हूं कि दलित सन्त वीर मेघमाया के नाम पर पानी की कोई योजना बने । आपने जो मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष: डॉक्टर साहब ने अपने आवेदन में 'डाक टिकट जारी करने' के बारे में लिखा था ।